प्रवेश 3

जैन पाठशाला हेतु पाठ्यक्रम

प्रस्तुति

डॉ. मनीषा दिलीप जैन

छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

प्रवेश - 3

जैन पाठशाला हेतु पाठ्यक्रम

प्रस्तुती

डॉ. मनीषा जैन

छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

प्रथम संस्करण : 2019

मुद्रक :

प्रकृति प्रिंटर्स

छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

मो. 8319637899

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ क्र.
	विषय सूची	1
	प्रस्तावना	2
पाठ 1	णमोकार मंत्र	3
पाठ 2	आईये सीखें मात्राएँ	8
पाठ 3	पंच परमेष्ठी	14
पाठ 4	चौबीस तीर्थंकर	18
पाठ 5	जीव अजीव	23
पाठ 6	आहार आचार	26
पाठ 7	भगवान महावीर-आदर्श हमारे	31
पाठ 8	बाप रे पाप !	34
पाठ 9	कलिकाल सर्वज्ञ कुंदकुंदाचार्य	40
पाठ 10	कषायों की कथाएँ	43
पाठ 11	आओ कविताएँ पढ़ें	51
पाठ 12	जिनवाणी स्तुति	52

प्रस्तावना

ज्ञान समान न आन जगत में सुख कौ कारण ।
इहि परमामृत जन्म जरा मृत्यु रोग निवारन ।।

छहढाला में पंडित दौलतराम जी ने ज्ञान को सुख का कारण बताया है ।

न्यानं तिलोय सारं, न्यानं दंसेइ दंसनं मग्गं ।
जानदि लोय पमानं, न्यान सहावेन सुधमपानं।।258।।

ज्ञान समुच्चय सारजी ग्रंथ में आचार्य प्रवर श्रीमद जिन तारण तरण ने भी ज्ञान को स्वपर प्रकाशक बताया है। ज्ञान की महिमा तो यही है कि उपाध्याय परमेष्ठी को शिक्षक की संज्ञा दी है। सहस्त्र वर्षों से पाठ पढ़ाने की यह परंपरा जैन धर्म में विद्यमान है । आज जब ज्ञान का क्षयोपशम कम होता जा रहा है, तब जैन धर्म, दर्शन, सिद्धांत और आचरण की शिक्षा देने के लिये संचार माध्यमों और वास्तविकता से जोड़ने वाले साधनों की अत्यंत आवश्यकता है ।

शिक्षा को संस्कार बनाने हेतु नर्सरी कक्षा से ही जैन वाड्.गमय का परिचय आवश्यक है। सरलतम पद्धति, आकर्षक डिजाइन, अभ्यास, प्रायोजना कार्य, व्यवहारिक क्रियाकलाप को बच्चों की उम्र के सापेक्ष मनोवैज्ञानिक तरीके से संयोजित करना आवश्यक है। पुरूस्कार एवं स्वल्पाहार का उद्देश्य आकर्षण है किंतु उसमें बँटने वाला बाजारू, अशुद्ध, खाद्य पदार्थ, चॉकलेट आदि उन्हें दी जा रही आचरण शिक्षा के लिये विरोधाभासी है जबकि तारण समाज का सूत्र है – जिसमें संक्षेप में सारभूत कथन होये, जाके सुने से जीव के मन, वचन, काय एकरूप हो जायें । ऐसे ही अनेक सूत्र तारण वाणी में गागर में सागर की तरह भरे हुये हैं। उन्होंने पूरा जिनागम मोतियों की तरह 14 ग्रंथों में पिरो दिया है। आवश्यकता है कि प्रथमतः जैन सिद्धांतों का परिचय हो। पद्धति रूढ़िमुक्त होकर नया स्वरूप स्वीकारें। प्रस्तुत पुस्तक में जिनागम में आये शब्दों, उनके अर्थ, प्रयोग और व्यवहार का परिचय, रंग, चित्र, रेखाचित्र, सुक्तियां, गीत, लघुकथा, छंद, फूलना, वार्तालाप के माध्यम से करवाया गया है। लेखन, वाचन, क्षमता का विकास करने हेतु प्रयोजना कार्य हैं। दक्षता संकेत, शब्दार्थ, विधा की विविधता इस पाठ्यक्रम की विशेषता है। समग्रतः जैन दर्शन के आधारभूत सिद्धांत इस आधार पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं ।

छिन्दवाड़ा के समाज श्री पं. जयचंद जी, मेरी माँ श्रीमती मालती जैन, पिता श्री रमेशचंद्र सिंघई, पति श्री दिलीप जैन, अग्रज श्री प्रमोद जैन, ब्र. डॉ. आरती दीदी, परिवार और समस्त समाज के बंधुओं के उत्साहवर्धन ने मुझे हमेशा इन कार्यों के लिये प्रेरित किया है। ब्र. श्री बसंतजी, ब्र. श्री आत्मानंद जी (श्री संघ) एवं समस्त साधकों द्वारा समाज उत्थान हेतु किया गया प्रयास, मुझे मेरे दायित्व की याद दिलाता आया है। आदरणीय दाजी श्रीमंत स्व. डालचंद जी एवं आदरणीय ब्र. गुलाबचंद जी, ब्र. जयसागर जी का वात्सल्यमयी सानिध्य आज हुये इस उपक्रम का बीज रूपक है।

वर्तमान अखिल भारतीय तारण–तरण जैन युवा परिषद् कार्यकारिणी के जुझारू, कर्मठ पदाधिकारियो नें पुस्तक प्रकाशन, पाठशाला एवं शिविर संचालन का बीड़ा उठाया है । जिसके निमित्त यह पाठ्यक्रम प्रस्तुत है। अ.भा.श्रीता.त. दि. जैन महासभा न्यास के वर्तमान कर्मठ, विद्वान सदस्यों का आभार जिन्होंने विकल्पों को साकार किया। संकलित समस्त रचनाकारों के प्रति आभार। आशा है पूर्वाग्रह रहित अवलोकन कर दिशा निर्देश करेंगे । विद्यार्थी लाभान्वित होंगे । सविनय ।

डॉ. मनीषा दिलीप जैन
छिन्दवाड़ा मो. नं. 9826449970

पाठ - 1
णमोकार मंत्र

संकेत : अनादिनिधन महामंत्र णमोकार को शुद्ध बोलना, पढ़ना, लिखना सीखेंगे। मंत्र का महात्म्य जानेंगे। लोक में मंगलकारी, उत्तम और शरण पंच परमेष्ठी ही हैं । यह अनादिनिधन मंत्र षट्खण्डागम ग्रंथ का मंगलाचरण है ।

शब्दार्थ : णमो—नमस्कार, लोक—लोक में, पंच—पाँच, पावप्प—पापों का, णासणो—नाश करने वाला, हवई—होता है, केवलिपण्णत्तो—केवली भगवान द्वारा बताये गये, धम्मो—वीतराग धर्म, चत्तारि—चार, लोगुत्तमों—लोक में उत्तम, मंगल—पापों को गलाने वाला, शरण—सहारा, आत्मा—ज्ञान, दर्शन चेतना वाला जीव, दुःख—भव भ्रमण (संसार में भ्रमण)

ऊँ

णमो अरिहंताणं।
णमो सिद्धाणं।
णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्व साहूणं।

लोक में सभी अरिहंतों को नमस्कार हो। लोक में सभी सिद्धों को नमस्कार हो। लोक में सभी आचार्यों को नमस्कार हो। लोक में सभी उपाध्यायों को नमस्कार हो। लोक में सब साधुओं को नमस्कार हो।

एसो पंच णमोयारो।
सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं।
पढ़मं हवइ मंगलं।

यह पंच नमस्कार मंत्र सभी पापों का नाश करने वाला है यह पहला मंगल है। इसे पढ़ने से राग-द्वेष का अभाव होता है और सम्यग्ज्ञान प्राप्त होता है।

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।

लोक में चार मंगल हैं। अरहंत भगवान मंगल हैं, सिद्ध भगवान मंगल हैं, साधु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) मंगल हैं। केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म मंगल है।

लोक में चार उत्तम हैं। अरहंत भगवान उत्तम हैं, सिद्ध भगवान उत्तम हैं, साधु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) उत्तम हैं। केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म उत्तम है।

मैं चारों की शरण में जाता हूँ। अरहंत भगवान की शरण जाता हूँ। सिद्ध भगवान की शरण में जाता हूँ। साधुओं(आचार्य, उपाध्याय, साधु) की शरण में जाता हूँ। केवली भगवान द्वारा बताये गये वीतराग धर्म की शरण में जाता हूँ।

मंगल - जिससे रागद्वेष गल जाता है और सच्चा सुख उत्पन्न होता है, उसे मंगल कहते हैं। पंच परमेष्ठी स्वयं मंगलमय हैं। उनको याद करने से मंगल होता है।

उत्तम - लोक में जो सबसे महान हो उसे उत्तम कहते हैं । पंच परमेष्ठी सबसे महान हैं इसलिये उत्तम हैं ।

शरण - सहारा ही शरण है। केवली भगवान द्वारा कहे गये वीतराग धर्म पर चलकर पंच परमेष्ठी भगवान की तरह हमें भी अपनी आत्मा की शरण लेना चाहिए।

लाभ - जो जीव लोक में मंगलकारी उत्तम पंच परमेष्ठी की शरण लेता है उसके दुःख मिट जाते हैं।

अभ्यास

प्रश्न 1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

अ) णमो अरि......ताणं।

ब) णमो सिद्धा.......... ।

स) णमो ....रियाणं।

द) .... उवज्झायाणं।

इ) .... ल....ए सव्व साहूणं।

प्रश्न 2 दिये गये खण्डों से शब्द चुनकर णमोकार मंत्र पूरा करो-

अरि	णमो	साहू	णमो
णमो	उव	सव्व	णं
ज्झायाणं	सिद्धाणं	णमो	आइ
हंताणं	लोए	रियाणं	णमो

....

....

....

....

....

प्रश्न 3 सारणी से शब्द चुनकर चार मंगल पूरा करो-

चत्तारि	मंगलं	अरहंत
		सिद्धा
केवली	पण्णत्तो	साहू
		धम्मो

चत्तारि मंगलं ।

....

....

....

....

प्रश्न 4 पैटर्न में खाली स्थान भरिये -

णमो

________________ ________________

________________ ________________

____

प्रश्न 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

अ. णमोकार मंत्र का शुद्ध उच्चारण कीजिए ?

ब. णमोकार मंत्र में किसे नमस्कार किया गया है ?

स. पंच नमस्कार मंत्र को और क्या-क्या नाम से याद करते हैं ?

द. णमोकार मंत्र पढ़ने से क्या लाभ है ?

इ. चत्तारि मंगलं सुनाइये ?

ई. मंगल किसे कहते हैं? मंगल कौन है?

उ. शरण किसे कहते हैं? शरण कौन हैं ?

ऊ. उत्तम किसे कहते हैं ? उत्तम कौन हैं ?

ए. शरण लेने से क्या होता है ?

ऐ. पाठ का सारांश बताइये ?

पाठ - 2

आइये सीखें मात्राएँ

संकेत – इस पाठ में हिन्दी वर्णमाला के 52 अक्षरों का पुनः अभ्यास होगा। य से ढ़ तक 14 व्यंजनों के द्वारा 80 शब्दों की जानकारी होगी। 12 मात्राओं को सीखकर णमोकार मंत्र में आयी मात्राएँ पहचान पायेंगे । मात्राओं के द्वारा 48 शब्दों की जानकारी होगी।

स्वर वर्ण -	**अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ,**
	ए, ऐ, ओ, औ
आयोगवाह-	**अं, अः**
व्यंजन वर्ण -	**क्, ख्, ग्, घ्, ङ्**
	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
	त्, थ्, द्, ध्, न्
	प्, फ्, ब्, भ्, म्
अल्पप्राण ध्वनि -	**य्, र्, ल्, व्**
महाप्राण ध्वनि-	**श्, ष्, स्, ह्**
संयुक्त व्यंजन-	**क्ष, त्र, ज्ञ, श्र**
लुंठित वर्ण-	**ड़, ढ़**

य - यक्ष, यश, युग, योग, योनि, युगल

र - रति, रक्षा, रत्न, राम, राग, रोग

ल - लब्धि, लक्षण, लाभ, लोक, लेश्या, लिंग

व - वस्तु, वंदना, वाणी, विधि, विश्व, वीतराग

श - शब्द, शक्ति, शांति, शिला, शोक, शीतल

ष - षट्, षट्कमल, षट् द्रव्य, षट् कारक, षष्ठी, षट् दर्शन

स - समय, सर्वज्ञ, सम्यक, सत्य, सुख, संयम

ह - हर्ष, हास्य, हितकर, हित, ह्रीं, हेतु

क्ष - क्षपक, क्षमा, क्षेत्र, क्षोभ, क्षणिक, क्षेमंकर

त्र - त्रस, त्रिकाल, त्रिलोक, त्रियोग, त्रिशला, त्रिभंगीसार

ज्ञ - ज्ञान, ज्ञायक, ज्ञेय, ज्ञानी, ज्ञेयाकार, ज्ञप्ति

श्र - श्री, श्रुत, श्रोता, श्रेणिक, श्रेणी, श्रेयांसनाथजी

ड़.- ममलपाहुड़, दोहा पाहुड़, अष्टपाहुड़

ढ़ - मूढ़ता, अमूढ़ दृष्टि, पढ़ना, बढ़ना, गढ़ना

संयुक्त व्यंजन -

त् + र = त्र   ष् + र = श्र

क् + ष = क्ष   ज् + ञ = ज्ञ

आओ सीखें मात्राएँ :-

आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ा	ि	ी	ु	ू	ृ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
े	ै	ो	ौ	ं	ाः

णमो अरिहंताणं

मात्राएँ :- ो (ओ की मात्रा), ि (छोटी इ की मात्रा), ं (अं की बिंदी), ं (अं की बिंदी)

णमो सिद्धाणं

मात्राएँ :- ो (ओ की मात्रा), ि (छोटी इ की मात्रा), ा (आ की मात्रा), ं (अं की बिंदी)

णमो आइरियाणं

मात्राएँ :- ो (ओ की मात्रा), ा (आ की मात्रा), ि (छोटी इ की मात्रा), ा (आ की मात्रा), ं (अं की बिंदी)

णमो उवज्झायाणं

मात्राएँ :- ो (ओ की मात्रा), ा (आ की मात्रा), ा (आ की मात्रा) ं (अं की बिंदी)

णमो लोए सव्व साहूणं

मात्राएँ :- ो (ओ की मात्रा ो (ओ की मात्रा), ा (आ की मात्रा), ू (उ की मात्रा), ं (अं की बिंदी)

मात्राएं गिनना

। : एक (लघु)
ऽ : दो (गुरू)

मन्त्र	मात्राएँ	अक्षर	व्यंजन
ण मो अ रि हं ता णं । ऽ । । ऽ ऽ ऽ	11	7	6
ण मो सि द्धा णं । ऽ ऽ ऽ ऽ	9	5	5
ण मो आ इ रि या णं । ऽ ऽ । । ऽ ऽ	11	7	5
ण मो उ व ज्झा या णं । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ	12	7	6
ण मो लो ए स व्व सा हू णं । ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ	15	9	8
	58	35	30

णमोकार मंत्र में 5 पद, 35 अक्षर, 58 मात्राएँ, 30 व्यंजन और 35 स्वर हैं।

पंच परमेष्ठी के वाचक मन्त्र :-

छः अक्षर वाला मंत्र - अरिहंत सिद्ध या अरहंत साधु ।

पाँच अक्षर वाला - असिआउसा या नमः सिद्धेभ्यः।

चार अक्षर वाला - अरिहन्त या असिसाहू।

दो अक्षर वाला - सिद्ध, ओम् या अर्हं।

एक अक्षर वाला - अ, ऊँ, र्हं, श्रीं, ह्रीं

अभ्यास

अ से	-	अर्हं,	—रहंत,	— चरज,	— लग
आ की मात्रा	-	आत्मा,	अ—हार,	अ—चार्य,	अ—दिनाथ
इ की मात्रा	-	अरिहंत,	—सद्धाणं,	चत्ता—र	आइ—रयाणं
ई की मात्रा	-	वीर,	ज—व,	अज—व,	त—र्थ,
		त—र्थंकर			
उ की मात्रा	-	चक्षु,	साध ,	कंथनाथ,	प्रभ ,
		लोगत्तमा			
ऊ की मात्रा	-	साहूणं,	झठ,	मढ़ ,	अमढ़,
		पर्ण			
ऋ की मात्रा	-	पृथ्वी,	कत ,	कष्ण,	कति,
		गहित			
ए की मात्रा	-	देव,	दह,	परमष्ठी,	एकन्द्रिय,
		एसो			
ऐ की मात्रा	-	मैं,	ह,	मंने ,	जन,
		मल,	कसे		
ओ की मात्रा	-	णमो,	ल—ए,	ल—क,	धम्म —
औ की मात्रा	-	औदारिक,	च—दह,	अ—दयिक,	म—न,
		क—न			
ं की बिंदी	-	अरहंताणं,	सिद्धाण,	आइरियाण,	साहूण
ाः	-	नमः,	सिद्धेभ्य,	दु ख,	ऊँ नम

प्रश्न 2 खाली स्थान भरिये ।

1. णमोकार मंत्र .... भाषा में .... छन्द में रचा गया है।
2. णमो सिद्धाणं पद में .... मात्राएँ हैं ।
3. णमो उवज्झायाणं पद में .... अक्षर है।
4. .... मंत्र में णं शब्द अन्त दीपक है।
5. अपवित्र दशा में णमोकार मंत्र .... पढ़ना चाहिए।

क्रियाकलाप :-

प्रश्न 1 णमोकार मंत्र को किस ग्रंथ से लिया गया है?

प्रश्न 2 णमोकार मंत्र के अपमान से सुभौम चक्रवर्ती नरक गया, कथा खोजें?

प्रश्न 3 णमोकार मंत्र पर श्रद्धा कर अंजन चोर ने ऋद्धि प्राप्त की, कथा खोजें ?

प्रश्न 4 जीवन्धरकुमार ने मरते हुए कुत्ते को णमोकार मंत्र सुनाया, जिससे वह मरकर देव हुआ। उस घटना को सुनाईये ।

प्रश्न 5 णमोकार मंत्र संबंधी भजन तैयार कीजिये।

आओ जानें - पंच परमेष्ठी पद से समझे

धर्म अर्थात् आत्मा की समझ। जो आत्मा को समझता है वह भगवान होता है।
भगवान को पूरा ज्ञान होता है। उनको राग नहीं होता ।
भगवान सब जानते हैं। वे किसी का कुछ नहीं करते ।
भगवान को भूख नहीं लगती। वे कुछ नहीं खाते ।
अरहंत भगवान हैं, सिद्ध भगवान हैं
महावीर भगवान हैं, सीमंधर भगवान अरिहंत हैं ।
अरिहंत के शरीर होता है, सिद्ध के शरीर नहीं होता ।
मुनि हमारे गुरू हैं, वे आत्मा का ध्यान करते हैं।
उनके पास कमंडल व पीछी है, सच्चे मुनि को आत्मज्ञान होता है।
कुंद-कुंद मुनि आचार्य थे, आचार्य भी मुनि हैं।
उपाध्याय और साधु भी मुनि हैं, सारे मुनि हमारे गुरू हैं।
वे हमें धर्म का उपदेश देते हैं, सदा गुरू के दर्शन विनय व भक्ति करना चाहिए।

पाठ - 3
पंच परमेष्ठी

संकेत : इस पाठ में जैन धर्म के मूल महामंत्र में निहित अर्थ का परिचय प्राप्त करेंगे । पंच परमेष्ठियों के स्वरूप का परिचय प्राप्त कर उनके प्रति सच्ची समझ विकसित होगी। पंच परमेष्ठी के प्रतीक णमोकार मंत्र को पढ़कर आत्म स्वरूप का ध्यान करना सीखेंगे । सच्चा सुख पाने का प्रयास करेंगे ।

शब्दार्थ : परम - सबसे श्रेष्ठ, मुनि-साधु, अप्पा-आत्मा, परमप्पा-परमात्मा, घातिया-गुणों को दबाने वाला, मोक्ष-सच्चा सुख, चतुष्टय-चार, गुण-लक्षण, प्रगाढ़-गहरा, निर्वाण-मुक्ति, लोकाग्र-लोक के आगे, सिद्धशिला-जहाँ सिद्ध विराजमान होते हैं, अनादि-जिसका आरंभ नही, पथ-रास्ता, नायक-नेता, प्रधान-मुख्य, उपदेश-आत्मस्वरूप को बताना, दीक्षा-वैराग्य, प्रायश्चित अपनी भूल सुधारना, करूणा-दया, आगम-अरहंतादि द्वारा बताये गये आत्मस्वरूप का लिखित रूप, कषाय-बुरा भाव, द्वादशांग - बारह अंग, दिगम्बर-दिशाएँ हैं अंबर जिसका ।

जो परमपद में स्थित होते हैं वे परमेष्ठी कहलाते हैं। लोक में सबसे उत्तम परमपद अरहंत सिद्ध आदि है। इन परमपदों में स्थित अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी हैं। ये पाँच हैं इसलिये पंच परमेष्ठी कहलाते हैं ।

अरहंत परमेष्ठी

रागद्वेष छोड़कर जो मुनिराज हो गये हैं ।
अप्पा ही परमप्पा कहते आत्म रमण करते हैं।
चार घातिया क्षय करके मोक्ष साधन करते हैं।
अनन्त चतुष्टय प्रगट हैं जिनके 46 गुण होते हैं।
जिनकी शरण में जाने से नशते पाप, होता कल्याण।
वे ही हैं सच्चे देव वीतरागी हैं, अरहंत महान ।

मूलगुण 46

सिद्ध परमेष्ठी

संसार छोड़कर जो मुनि अरहंत हो गये थे।
ज्ञेय-ज्ञायक आत्मा में ही प्रगाढ़ ध्यान लगाते हैं।
चार घातिया और चार अघातिया कर्मों को क्षय करते हैं।
समस्त कर्म और परद्रव्यों से मुक्त हो गये हैं।
जो निर्वाण प्राप्त कर लोकाग्र सिद्ध-शिला में स्थित
अनादि अनंत काल विराजमान सिद्ध परमेष्ठी होते हैं ।

मूलगुण 08

आचार्य परमेष्ठी

जिस पथ से होता मोक्षमार्ग, उस पर चलते आचार्य प्रधान।
रत्नत्रय के धारी संघनायक उपदेश, दीक्षा, प्रायश्चित करते।
लीन सदा रहते स्वभाव में, ध्यान स्वरूप का करते हैं।
अति करूणा वश देते उपदेश, राग-भाव कभी न धरते हैं।
ऐसे हैं आदर्श हमारे जो आचार्य परमेष्ठी कहलाते हैं।

मूलगुण 36

उपाध्याय परमेष्ठी

आगम-शास्त्र-जिनवाणी का पठन-पाठन करते हैं
आत्म स्वरूप में एकाग्र होकर कषाय-मंद करते हैं।
धन्य मुनि वे शुभ भावों से भी बचते रहते हैं।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र में सदा अडिग रहते हैं।
उपयोग हटने पर करूणा वश जिनधर्म शिक्षा देते हैं।
ऐसे द्वादशांग के पाठी मुनिजन उपाध्याय कहलाते हैं।

मूलगुण 25

साधु परमेष्ठी

संसार-दशा को छोड़कर जो धर्म धारण करते हैं
दिगम्बर-विरागी मुद्रा धरकर मुनिजन विचरण करते हैं
त्याग परिग्रह आरंभ को, उद्दिष्ट आहार नहीं करते हैं।
न दाँत धोते, न ही नहाते, केश लोंच जो करते हैं।
28 मूल गुण का पालन कर सदा ध्यान जो करते हैं
नित आत्म-वैभव का चिंतन कर साधुजन कहलाते हैं।

मूलगुण 28

णमोकार महामंत्र में सबसे पहले अरिहंत और सिद्ध भगवान को नमस्कार किया है। भगवान ने मोक्ष का धर्म मार्ग बताया है। उस मार्ग पर चलने वाले आचार्य, उपाध्याय, साधु को नमस्कार किया है। लोक में जितने भी मुनिराज हैं वे सब साधु परमेष्ठी है ।

लाभ - ये पाँच ही परमपद में स्थित उत्तम हैं । यही लोक में शरण है । इन पाँचों परमेष्ठियों ने अपनी आत्मा का ही शरण लिया है। हमें भी आत्मा का ही शरण लेना है।

आत्मा को जानना, पहचानना और उसमें ही रमण करना शरण में जाना कहलाता है। यही सच्चा सुख पाने का उपाय है । इससे पाप गल जाते हैं । यही मंगल है।

अभ्यास

प्रश्न1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. जो परम पद में स्थित होते हैं, वे .... कहलाते हैं। (अरहंत/परमेष्ठी)

ब. परमेष्ठी .... होते हैं। (पाँच/छह)

स. .... परमेष्ठी के चार घातिया कर्मों का क्षय हो गया है। (अरहंत/सिद्ध)

द. सिद्ध परमेष्ठी के .... घातिया-अघातिया कर्मों का क्षय हो गया है। (चार/आठ)

इ. सिद्ध परमेष्ठी लोकाग्र .... में विराजमान है। (सिद्धशिला / पाण्डुकशिला)

प्रश्न2 सोच समझकर उत्तर दो -

1. जो साधु संघ के नायक होते हैं उन्हें क्या कहते हैं?
2. जो साधु करूणावश जिनधर्म की शिक्षा देते हैं उन्हें क्या कहते हैं?
3. जो साधु 28 मूलगुण धारी होते हैं उन्हें क्या कहते हैं?
4. परमपद में स्थित कितने पद हैं?
5. पंच परमेष्ठी का स्वरूप जानने से हमे क्या लाभ होगा?
6. पंच परमेष्ठी के अलावा कौन हमारा इष्ट है?

प्रायोजना कार्य -

1. पंच परमेष्ठी भगवान के गुणों के नाम पता करो ।
2. अरहंत परमेष्ठी सच्चे देव क्यों हैं? पता लगाओ ।
3. पाठशाला में पाठ याद करके सुनाओ ।
4. सुलेख में णमोकार मंत्र लिखिये।
5. क्या तुम क्राफ्ट वर्क से णमोकार मंत्र लिख सकते हो ?

पाठ - 4
चौबीस तीर्थंकर

संकेत - इस पाठ में तीर्थंकर और भगवान में अंतर तथा समानता करना सिखाया है । तीर्थंकरों की पुण्य विभूतियों, पंचकल्याणक को समझाया है। तीर्थंकर हुये बिना भी मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है । भगवान बनने वाले 24 तीर्थंकरों के नाम और चिह्न की पहचान करवायी गई है ।

शब्द-कोश - तीर्थंकर-तीर्थ के कर्ता, पुण्य-शुभ भाव, पंचकल्याणक-पांच उत्सव, केवल ज्ञान-पूर्ण ज्ञान, केवली-केवलज्ञान धारी, वीतरागी-जिनका राग बीत गया हो, सर्वज्ञ - तीन लोक, तीन काल की समस्त पर्यायों को एक साथ जानने वाले, मंदिरविधि-आत्म साधन हेतु विधि, ग्रंथ - शास्त्र

जो धर्मतीर्थ का उपदेश देते हैं । जिनको तीर्थंकर नाम कर्म का पुण्य उदय होता है वे तीर्थंकर कहलाते हैं । उनके पंचकल्याणक होते हैं। जब तीर्थंकर जन्म लेते हैं, तब छः माह पहले से कुबेर धन की वर्षा करते हैं। जनम होने पर सौधर्म इंद्र उत्सव करते हैं। दीक्षा-वैराग्य होने पर देव-मनुष्य पालकी उठाने आते हैं किंतु संयम करने वाले मनुष्य ही पालकी उठाते हैं। जब उनको केवल ज्ञान होता है तब भी अतिशय होता है । समवशरण लगता है । वाणी खिरती है। निर्वाण (मोक्ष) होने पर तीर्थंकर अरहंत भगवान अनंतानंत काल के लिये लोकाग्र में विराजमान हो जाते हैं।

तीर्थंकर 24 ही होते हैं । भगवान अनेक हो सकते हैं। जो तीर्थंकर नहीं होते वे भी अरहंत सिद्ध परमेष्ठी भगवान हो सकते हैं । प्रत्येक तीर्थंकर भगवान होते हैं । प्रत्येक भगवान तीर्थंकर नहीं होते । वीतरागी सर्वज्ञ अरहंत सिद्ध परमेष्ठी भगवान है । भरत, बाहुबली भगवान है परंतु तीर्थंकर नहीं । रावण और सीताजी के जीव तीर्थंकर होने वाले हैं।

- चौबीस तीर्थंकर के नाम -

श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, पदम प्रभु छटवें जिनेश्वर ।
सप्तम तीर्थंकर, भये है सुपारस चंद्राप्रभु आठम है निवारस ।
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य अरू विमल अनंत ।
धर्मनाथ वंदत, अविनीश्वर सोलह कारण शांति जिनेश्वर ।
कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुब्रत बीस, नमियो अष्टांग सिद्ध इकवीसा ।
नेमिनाथ साहसि, गिरिनेम सहनशील, बाईस परीष ।
पारस नाथ तीर्थंकर तेईस, वर्द्धमान जिनेश्वर चौबीस ।

ये नाम हम प्रतिदिन मंदिर विधि में पढ़ते हैं । तीर्थंकरों के जन्म के समय दाहिने पैर में सौधर्म इंद्र को जो चिह्न दिखाई देता है। वह इनकी पहचान बन जाता है।

चौबीस तीर्थंकर के नाम और उनके चिह्न और रंग -

तीर्थंकर के नाम	चिह्न	रंग
१. ऋषभदेवजी (आदिनाथ)	बैल	पीत
२. अजितनाथजी	हाथी	पीत
३. संभवनाथ जी	घोड़ा	पीत
४. अभिनन्दननाथजी	बंदर	पीत
५. सुमतिनाथ जी	चकवा	पीत
६. पद्मप्रभुजी	लालकमल	रक्त
७. सुपार्श्वनाथजी	साँथिया	हरित
८. चन्द्रपभु जी	चन्द्रमा	धवल
९. पुष्पदंतजी (सुविधिनाथ)	मगरमच्छ	धवल
१०. शीतलनाथजी	कल्पवृक्ष	पीत
११. श्रेयांसनाथजी	गेंडा	पीत
१२. वासुपूज्यजी	भैंसा	रक्त
१३. विमलनाथजी	सूकर	पीत
१४. अनंतनाथजी	सेही	पीत
१५. धर्मनाथजी	वज्रदण्ड	पीत
१६. शांतिनाथजी	हिरण	पीत

तीर्थंकर के नाम	चिह्न	रंग
१७. कुन्थुनाथ जी	बकरा	पीत
१८. अरनाथजी	मछली	पीत
१९. मल्लिनाथजी	कलश	पीत
२०. मुनिसुब्रतजी	कछुआ	श्याम
२१. नमिनाथजी	नीलकमल	पीत
२२. नेमिनाथजी	शंख	श्याम
२३. पार्श्वनाथजी	सर्प	हरित
२४. महावीरजी (वीर, अतिवीर, वर्द्धमान, सन्मति)	सिंह	पीत

लाभ - इनका नाम स्मरण करने से मंगल होता है। तीर्थंकरों के समवशरण में वाणी खिरती है। इस वाणी को गणधर झेलते हैं और आचार्य ग्रंथ में लिखते हैं। ऐसी जिनवाणी में बताए मार्ग पर चलकर हम भी उन जैसे भगवान बन सकते हैं । सच्चा सुख पा सकते हैं।

आईये जाने - तीर्थंकर और सामान्य अरिहंत में क्या अंतर है ?

तीर्थंकर चौबीस होते हैं और सभी तीर्थंकर भगवान होते हैं किंतु सभी भगवान तीर्थंकर नहीं होते हैं। तीर्थंकरों को कल्याणक होते हैं, सामान्य अरिहंतों के नहीं। तीर्थंकरों के चिह्न होते हैं अरिहंतों के नहीं। तीर्थंकर के समवशरण होता है, सामान्य अरिहंतों का नही। तीर्थंकर की गंध कुटी और गणधर होते हैं, सामान्य अरिहंतों के नहीं। तीर्थंकरों को जन्म से अवधि ज्ञान होता है, दीक्षा लेते ही मनःपर्याय ज्ञान होता है, सामान्य अरिहंतों के लिये यह नियम नहीं। तीर्थंकर स्वयं दीक्षित होते हैं।

अभ्यास

प्रश्न1 रेखा खींच कर चित्रों को नाम से मिलाइये-

1. सिंह	ऋषभदेवजी
2. शंख	सुमतिनाथजी
3. सर्प	पद्मप्रभु जी
4. बैल	पुष्पदंत जी
5. लालकमल	शांतिनाथजी
6. चकवा	अरनाथजी
7. नीलकमल	नमिनाथजी
8. हिरण	नेमिनाथजी
9. मछली	पार्श्वनाथ जी
10. मगरमच्छ	महावीरजी

प्रश्न2 रिक्त स्थानों की पूर्ति करो-

1. .... धर्मतीर्थ का उपदेश देते हैं। (तीर्थंकर/भगवान)

2. तीर्थंकर को .... नाम कर्म का पुण्य उदय होता है। (तीर्थंकर/वज्रवृषभ)

अभ्यास

प्रश्न3 प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1) तीर्थंकर किसे कहते हैं?
2) तीर्थंकर कितने होते हैं ?
3) तीर्थंकर के कितने कल्याणक होते हैं और कौन-कौन से नाम लिखिये।
4) तीर्थंकर को होने वाले अतिशय पता कीजिए ।
5) भरत-बाहूबली कौन हैं पता लगाईये ।
6) रावण, सीताजी के जीव क्या तीर्थंकर होंगे? पता लगाईये ।
7) तीर्थंकरों के नाम, चिन्ह और रंग याद करके सुनाईये ।
8) मंदिर विधि में चौबीस तीर्थंकर के नाम वाली स्तुति सुनाईये।
9) तीर्थंकरों के समवशरण के विषय में पता लगाईये।
10) क्या हम तीर्थंकर बन सकते हैं ? बातचीत कीजिए।

प्रायोजना कार्य -

1) तीर्थंकरों के नाम का चार्ट बनाईये ।
2) कोई पाँच तीर्थंकरों की कहानी याद करके सुनाईये।
3) पता कीजिए तीर्थंकरों का रक्त कैसा होता है ?
4) कितने तीर्थंकर बाल ब्रम्हचारी थे ?
5) प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने क्या-क्या शिक्षा दी ?
6) भूतकाल एवं भविष्य काल के तीर्थंकरों के नाम याद कीजिए।
7) एक से अधिक नाम वाले तीर्थंकरों की सूची बनाईये ।
8) तीर्थंकरों की रंग के अनुसार सूची बनाईये ।
9) तीन पद के धारी तीर्थंकरों की सूची बनाईये ।
10) सोलह स्वप्न का चित्र बना कर रंग भरिये ।

पाठ - 5

जीव अजीव

संकेत - जीव और अजीव में अंतर करके मैं जीव हूँ का बोध कर पायेंगे । जीव को छोड़कर अन्य द्रव्य अजीव हैं। तिर्यंच गति के जीवों की जानकारी होने से अहिंसा, दया, करूणा का भाव जाग्रत होगा । इस पाठ से भेदज्ञान का अभ्यास करना सीखेंगे।

शब्दार्थ- जीव-आत्मा, ज्ञान-जानने की शक्ति, दर्शन-देखने समझने की शक्ति, गति-भव जिनमें जीव जन्म लेते हैं, रमणकरना-लीन हो जाना, पाप-बुरा काम, सच्चा सुख-मोक्ष

जीव का लक्षण - जो जानता देखता है । जिसमें ज्ञान है। वह जीव है जिसमें जानने (ज्ञान) और देखने (दर्शन) की शक्ति होती है, वह जीव है। जो जीवित था, जीवित है और सदा काल जीवित रहेगा वह जीव है। मैं यानि आत्मा जीव है। आत्मा (मेरे) में जानने, देखने की शक्ति है। चारों गतियों में जीव होते हैं।

अजीव का लक्षण - जो जानता देखता नहीं है। जिसमें ज्ञान नहीं है। वह अजीव है। जिसमें ज्ञान (जानने) और दर्शन (देखने) की शक्ति नहीं होती वह अजीव है। शरीर, कपड़े, मकान, पेन, पेन्सिल आदि अजीव हैं।

जीव तथा अजीव में भेद-ज्ञान - जीव सुख दुख को अनुभव कर सकता है। अजीव नहीं कर सकता है । आत्मा (जीव) में देखने जानने की शक्ति है । शरीर (अजीव) में नहीं । तो क्या आँख, नाक, कान, मुँह, हाथ, पैर आदि शरीर के अंग अजीव हैं? हाँ ! क्योंकि वे जानदेख नहीं सकते। जब कोई मर जाता है तो आँख देख नहीं सकती, कान सुन नहीं सकते। देखने सुनने वाला तो ज्ञान होता है। ज्ञान आत्मा का (जीव) लक्षण है। शरीर में ज्ञान नहीं होता । संसार में जितने भी जीव हैं, उनके शरीर अजीव हैं परंतु उनमें रहने वाला आत्मा देखने जानने वाला जीव है।

लाभ - जीव अजीव में भेद जानकर हम आत्मा को जान समझ सकते हैं। आत्मा की पहचान होने पर, उसमें ही रमण करने से पापों से बच सकते हैं, सच्चा सुख पा सकते हैं। जो भगवान बनना चाहते हैं उन्हें जीव-अजीव की पहचान कर लेना चाहिए।

अभ्यास

प्रश्न 1 अपना परिचय लिखो-

1. मैं एक .... हूँ ।
2. मैं .... , ... हूँ ।
3. मेरे में .... है ।
4. मैं .... था, ... हूँ, ... रहूँगा ।

प्रश्न. 2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए - (चित्र देखकर)

1. यह किताब है।

अ) यह .... है ।

ब) यह जानती देखती .... है।

स) इसमें ज्ञान .... है ।

2. यह शरीर है।

अ) यह .... है।

ब) यह जानता .... नही है।

स) इसमें .... नहीं है।

द) यह सुख दुख का अनुभव .... कर सकता है।

प्रश्न.3 सत्य/असत्य में ☑ ☒ का निशान लगाओ-

1. संसार में जितने जीव हैं उनके शरीर अजीव हैं । ☐
2. ज्ञान आत्मा का लक्षण है । ☐
3. आँखें अजीव नहीं हैं । ☐
4. कान सुनते हुये भी सुन नहीं सकता क्योंकि वह अजीव है। ☐
5. शरीर में रहने वाला आत्मा जीव है। ☐

प्रश्न.4 सोच समझकर उत्तर दीजिए -

1. जीव का लक्षण क्या है?
2. अजीव का लक्षण क्या है?
3. जीव अजीव में क्या अंतर है?
4. जीव अजीव में भेद जानकर हमें क्या लाभ होगा?

प्रायोजना कार्य -

1. अपने आसपास का अवलोकन कर जीव अजीव वस्तुओं का चार्ट बनाओ ।
2. पाँच अजीव वस्तुओं का चित्र बनाकर रंग भरो ।
3. जीव क्या-क्या कर सकता है? अपनी दीदी से बात करके हल करो ।
4. वाद-विवाद प्रतियोगिता करो - शरीर अजीव है जीव नहीं ।
5. जीव पर भाषण दो ।

आईये जानें -

जीव के भेद : जीव दो तरह के हैं मुक्त एवं संसारी । मुक्त जीव शुद्ध हैं और संसारी जीव अशुद्ध हैं । मुक्त जीव मोक्ष में रहते हैं उनको पूरा सुख है, राग-द्वेष नहीं है, उनका जन्म-मरण नहीं होता । वे संसार में नहीं आते, दूसरों का कुछ नहीं करते। सिद्ध भगवान मुक्त हैं, अरिहंत भगवान जीवन मुक्त हैं। संसारी जीवों का जन्म-मरण होता है। स्वर्ग नरक तिर्यंच और मनुष्य जीव संसारी हैं।

आत्मा को न पहचानकर जीव संसार में भटकता हैं। जो आत्मा को पहचान ले वही सुखी होता है। प्रत्येक जीव अपनी भूल से ही दुखी है। प्रत्येक जीव भगवान बन सकता है। भगवान वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी होते हैं।

पाठ - 6
आहार आचार

संकेत - इस पाठ में भक्ष्य-अभक्ष्य पर बातचीत होगी । साफ-स्वच्छ आहार की समझ विकसित होगी। अभक्ष्य हिंसा, पाप का कारण है ऐसा जानकर बच्चों के आचरण में सादगी और नियम लेने की क्षमता विकसित होगी ।

शब्दार्थ- अशुद्ध - अपवित्र, गंदा, मैला जीवसहित बीमारी-रोग,
शुद्ध - पवित्र, स्वच्छ, जीवाणु रहित, हिंसा - जीवों का घात, पाप - बुरा कार्य
अभक्ष्य - न खाने योग्य, भक्ष्य - खाने योग्य, रात्रि - रात, निमित्त - सहयोगी कारण

सनय - पापा ! दस रूपये दो ना ।

पापा - अच्छा बेटा ! ये लो दस रूपये । इससे क्या खरीदोगे?

सनय - पापा ! मैं कुरकुरे खरीदूँगा या चिप्स ।

पापा - बेटा हम जैन हैं, कुरकुरे, चिप्स हम नहीं खाते ।

सनय - क्यों पापा ?

पापा - पाठशाला में दीदी ने बताया है ना कि बाजार में बिकने वाले कुरकुरे, चिप्स पैकेट खाने योग्य नहीं है। वे अशुद्ध हैं ।

सनय - पापा ! सब खाते हैं ।

पापा - हाँ बेटा ! बाजार में है तो लोग खाते हैं । पर हम जैन हैं । जैन आलू, प्याज, लहसुन आदि से बनी कोई भी चीज नहीं खाते। पैकेट में भरी हुई चीजें, बहुत दिन पहले बनाकर भर दी जाती है । उनका तेल, मसाला भी पुराना होता है। जिससे बीमारियाँ होती हैं।

सनय - अच्छा पापा ! हमें क्या-क्या नहीं खाना चाहिए ?

पापा - बेटा! छने पानी से बनी साफ-शुद्ध चीजें माँ तो रोज ही बनाती हैं। वही खाना चाहिए। बाजार में मैगी, चिप्स, कुरकुरे, चुटकी, पॉपकार्न, चॉकलेट, बिस्किट खाने योग्य नहीं होते हैं।

सनय - पर पापा उनकी दुकान तो कितनी साफ है।

पापा - हाँ सनय ! पर उनको बनाने वाला कैसा है? जगह कैसी है? यह कौन बतायेगा? वो तो रात में भी बनाते हैं।

सनय - तो क्या रात का बना हुआ भी नहीं खाते?

पापा - हाँ ! माँ तो शाम को ही रसोई बंद कर देती है ना। हम रात में भोजन नहीं करते।

सनय - यदि खा लिया तो क्या होगा?

पापा - बेटा रात में खाने से, बाजार की चीजें खाने से हिंसा होती है। हिंसा एक पाप है। पाप यानि बुरा कार्य। आलू, प्याज, रात का भोजन, इन सबमें जीव होते हैं। जो खाने पर हमारे निमित्त से मारे जाते हैं। इसीलिये जहाँ तक हो सके इनसे बचना चाहिए। ये अभक्ष्य कहलाते हैं ।

सनय - पर पापा स्कूल में भी सब खाते हैं ।

पापा - बेटा सब जैन नहीं है और यदि तुम उनको ये बातें बताओगे तो वे भी अभक्ष्य खाना बंद कर देंगे।

सनय - हाँ पापा ! मैं भी अभक्ष्य नहीं खाना चाहता। फिर हम माँ से कहेंगे रोज हमारे लिए नयी-नयी चीजें बनाकर खिलायें।

पापा - हाँ बेटा ! बाजार में आने वाली सब वस्तुएँ घर पर भी बनायी जा सकती हैं ।

माँ - हाँ ! सनय मैं सब सुन रही हूँ । चलो आज तुम्हें घर में बने हुये कुरकुरे, बिस्किट और चॉकलेट खिलाती हूँ ।

सनय - (हँसते हुये) हाँ माँ इससे मैं बीमार नहीं पड़ूँगा । पाप से बचूंगा और जो रूपये बचेंगे इससे अच्छी किताबें लेकर पढ़ूँगा। मैं अपने मित्रों से भी कहूँगा कि वे अभक्ष्य चीजें न खायें।

माँ पापा - शाबाश ! सनय !

याद रखने योग्य बातें -

1. बाजार से खरीदी गई खाने की वस्तुएँ अभक्ष्य होती है।
2. जिन्हें खाने से हिंसा का पाप लगता है ।
3. हमें प्रतिदिन छना पानी पीना चाहिए।
4. छने पानी से हाथ पैर धोना, नहाना चाहिए ।
5. छने पानी से बना भोजन, पकवान आदि ही खाना चाहिए। जिससे हम पापों से बचे रहते हैं।
6. रात में खाने से बीमारियाँ फैलती है। अनेक बैक्टीरिया रात में ही जनम लेते और मरते हैं। जिनसे शरीर में रोग पैदा होते हैं।
7. आलू-प्याज जमींकंद हैं। जमीन में जन्म लेने के कारण इनमें उनके ही जैसे अनंतानंत जीव होते हैं।
8. आलू प्याज खाने से अनंतानंत जीवों की मृत्यु हमारे कारण होती है। जो हिंसा कहलाती है।

आईये जानें : हम शाकाहारी हैं -

सभी जैन शाकाहारी होते हैं अर्थात् हम केवल शाकाहारी भोजन ही करते हैं। उन सब्जियों और फलों का सेवन करते हैं जिनसे जीवों की हानि नहीं होती। जैसे - तुरई, परवल, हरी मिर्च, लौकी, कद्दू, टमाटर, भिण्डी, करेला, गिलकी, नींबू, ककड़ी, बरबटी, मटर आदि सब्जियाँ और केला, संतरा, सेवफल, अनार, चीकू, अमरूद, तरबूज, खरबूज, नारियल, अंगूर, नाशपाती, अनानास, बेल, आलूबुखारा, आडू, लीची, पपीता, आम आदि मौसमी फल शाकाहारी होते हैं ।

जैन पौधों के प्रति भी दयालु होते हैं। इसलिए जमीन के नीचे पैदा होने वाली सब्जियाँ जैसे - आलू, प्याज, लहसुन, गाजर, चुकंदर, मूली आदि नहीं खाते । जमीन के बाहर होने वाले बहुबीज फल, सब्जियाँ जैसे - अंजीर, पाकर, कटहल, भटा आदि भी नहीं खाते हैं। इसी तरह माँस, मछली, अंडे तो साक्षात् जीवों की हिंसा करके ही प्राप्त होते हैं, इनका भक्षण तो कभी भी नहीं करते । विनेगर, एसेंस, शराब, साबूदाना आदि में भी जीवों की अत्यधिक हिंसा होती है अतः वे भी नहीं खाते हैं ।

अभ्यास

सोच समझकर उत्तर दीजिए ।

प्रश्न 1 अभक्ष्य किसे कहते हैं ?

प्रश्न 2 भक्ष्य किसे कहते हैं ?

प्रश्न 3 अभक्ष्य खाने से पाप होता है ? कैसे ?

प्रश्न 4 पानी छानने से क्या होगा ?

प्रश्न 5 पानी नहीं छानने से क्या होता है ?

प्रश्न 6 आपको कैसा लगेगा यदि -

अ) कोई तुम्हें पानी छानकर पीने के लिए कहे।

ब) कोई तुम्हें रात में बाजार की वस्तुएँ और भोजन न करने के लिए कहे।

स) माँ के साथ भोजन बनाना सीखने पर।

प्रश्न 7 तुम्हें भूख लगी है तो तुम क्या चुनना पसंद करोगे ? वस्तु का नाम लिखो

	घर में बना भोजन	बाजार का बना भोजन
1.	....	....
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....
6.	....	....
7.	....	....
8.	....	....
9.	....	....
10.	....	....

प्रायोजना कार्य -

1. अपनी माँ से पानी छानने की विधि पूछो ।
2. प्रतिदिन एक बार कपड़े के दोहरे छन्ने से पानी छानो और बिलछानी करो ।
3. अपने मित्रों से अभक्ष्य पर बात करो । दीदी आपको बात करना सिखायेंगी ।
4. कक्षा में पानी छानने का प्रयोग करो ।
5. सूक्ष्मदर्शी यंत्र से आलू के टुकड़े को ध्यान से देखो ।
6. चित्र देखकर वर्णन कीजिए -

____

____

____

____

पाठ - 7
बालक महावीर : आदर्श हमारे

संकेत - इस कहानी से भगवान महावीर के बाल्यकाल का परिचय मिलेगा। बच्चे उन्हें अपना आदर्श बनायेंगे । बालक महावीर जैसा बनने का प्रयास करेंगे ।

शब्दार्थ- आत्मा - जीव, वैरागी - वीतरागी, परेशान - दुःखी, पूर्वभव - इस जन्म से पहले वाला जन्म, जागृत - जागा, दीक्षा - संयम, सम्पूर्ण - पूरा, धर्मोपदेश - धर्म का उपदेश, पधारे - गये, आनन्द - जहां दुःख नहीं, त्यागो - छोड़ो, ग्रंथ - शास्त्र

क्या तुम भगवान् महावीर को पहचानते हो ? जैसे तुम आत्मा हो, वैसे ही महावीर भगवान् भी एक आत्मा हैं । उन्होंने आत्मा की पहिचान की और राग-द्वेष को दूर किया। इसी से वे भगवान् हुए । यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम भी भगवान् हो जाओगे।

'महावीर' के पिताजी का नाम सिद्धार्थ राजा और माता का नाम त्रिशला देवी था । उनका जन्म चैत्र सुदी 13 के दिन कुण्डलपुर नगर में हुआ था। जन्म से ही वे महान् आत्मज्ञानी और वैरागी थे। स्वर्ग के देव उनकी सेवा करने आते थे और छोटे-छोटे बालकों के रूप धारण कर उनके साथ खेलते थे।

खेलते हुए एक दिन एक देव ने बड़े सर्प का रूप बनाया और सब बालकों को डराने लगा, किन्तु महावीर ने उसे उठाकर दूर फेंक दिया। फिर एक बार राजा का हाथी पागल होकर भागा और लोगों को परेशान करने लगा तब बालक महावीर जाकर उसे पकड़ लाये। राजकुमार महावीर जब बड़े हुए तब एक बार उनको आपने पूर्वभव का ज्ञान हुआ। पूर्वभव का ज्ञान होते ही उनको बहुत वैराग्य जागृत हुआ जिससे वे दीक्षा लेकर मुनि हो गये।

उनको आत्मा की पहिचान तो थी ही। मुनि होने के बाद वे आत्मा का ध्यान करने लगे। आत्मा के ध्यान से उनके ज्ञान की शुद्धता बढ़ने लगी और राग छूटने लगा । ऐसा करते-करते सम्पूर्ण राग का नाश हो गया और पूर्ण ज्ञान प्रगट हुआ । इससे वे भगवान् हुए अर्थात् अरिहन्त कहलाये।

इसके बाद उनका धर्मोपदेश होने लगा । उपदेश सुनने के लिए जीवों के झुण्ड के झुण्ड आये। स्वर्ग के देव आये और बड़े-बड़े राजा आये। आठ वर्ष के बालक भी आये और उन्होंने आत्मा को समझा। जंगल से सिंह आये, चीते आये, हाथी आये, बन्दर आये, बड़े-बड़े सर्प आये और छोटे-छोटे मेंढक भी आये और उन्होंने आत्मा को समझा। भगवान महावीर ने बहुत वर्षों तक धर्म का उपदेश देकर जैनधर्म का बहुत प्रसार किया। अंत में वे पावापुरी से मोक्ष पधारे। पहले वे अरिहन्त थे, अब सिद्ध हो गये ।

कार्तिक कृष्णा 14 की रात्रि के पिछले पहर में मोक्ष पधारे । इसी लिए सर्वत्र दीपावली-महोत्सव मनाया जाता है।

साभार - जैन बालपोथी भाग १

इस समय महावीर भगवान् मोक्ष में विराजमान हैं, वहाँ वे पूर्ण आनन्द में हैं। बालकों ! महावीर भगवान् की तरह तुम भी आत्मा को पहिचानों, राग-द्वेष को त्यागो और मोक्ष को प्राप्त करो ।

अच्छे बच्चे होते हैं।

प्रातः सोकर जल्दी उठते, अच्छे बच्चे होते हैं ।
दन्तधोवन करते स्नान, अच्छे बच्चे होते हैं।
प्रतिदिन जो जिनमंदिर जाते, अच्छे बच्चे होते हैं ।
मात-पिता की सुनते बात, अच्छे बच्चे होते हैं ।
बड़े जनों का आदर करते, अच्छे बच्चे होते हैं।
रात्रि भोजन कभी न करते, अच्छे बच्चे होते हैं।
जीवों पर जो करूणा करते, अच्छे बच्चे होते हैं।
सत्य वचन ही सदा बोलते, अच्छे बच्चे होते हैं।
निंदा चुगली कभी न करते, अच्छे बच्चे होते हैं।
प्रेम भाव जो सबसे रखते, अच्छे बच्चे होते हैं।
झगड़ा टंटा कभी न करते, अच्छे बच्चे होते हैं।
आदर से जो जिनवचन सुनते, अच्छे बच्चे होते हैं।

अभ्यास

प्रश्न1 रिक्त स्थान भरिए-

1. महावीर भगवान् भी एक .... हैं ।
2. बालक ने .... को उठाकर दूर फेंक दिया ।
3. राजकुमार महावीर को अपने .... का ज्ञान हुआ।
4. कार्तिक कृष्णा 14 की रात्रि में .... पधारे।
5. पहले वे .... थे अब .... हो गए ।

प्र.2 सोच समझकर उत्तर दीजिए -

अ) बालक महावीर के माता-पिता का नाम लिखिये ?

ब) बालक महावीर का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

स) वे जन्म से ही कैसे थे ?

द) बालक महावीर के बचपन की घटनाएं बताईये ?

इ) बालक महावीर को वैराग्य क्यों हुआ ?

उ) अरिहंत महावीर के उपदेश सुनने कौन-कौन आए ?

ऋ) दीपावली की कहानी बताईये ?

प्रायोजना कार्य -

महावीर स्वामी की शिक्षाओं को याद कीजिए -

1. सभी आत्माएं बराबर हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है ।
2. भगवान कोई अलग नहीं होते, जो जीव पुरूषार्थ करे वही भगवान बन सकता है।
3. भगवान जगत की किसी भी वस्तु के कर्ता-धर्ता नहीं हैं, मात्र ज्ञाता-दृष्टा ही हैं।
4. हमारी आत्मा का स्वभाव जानना-देखना है, कषाय आदि करना नहीं है।
5. दिल दुखाना, झूठ बोलना और झूठ बोलने का भाव करना पाप है ।
6. चोरी करना और चोरी करने का भाव करना बुरा काम है।
7. संयम से रहें, क्रोध न करें, अभिमानी न बने, लोभी व्यक्ति सदा दुखी रहता है।
8. छल-कपट करना और भावों में कुटिलता रखना बहुत बुरी बात है।
9. हम अपनी ही गलती से दुखी हैं और अपनी भूल सुधार कर सुखी हो सकते हैं।
10. दीपावली अहिंसा का पर्व है, आतिशबाजी जलाकर हिंसा, पाप का कार्य न करें।

पाठ - 8
बाप रे ! पाप

संकेत - बच्चे पाँच पाप से परिचित होंगे। पार्श्वकुमार के बाल्यकाल में हुए कथानक से परिचित होंगे। मिथ्यात्व और पापों के स्वरूप को जानकर उन्हें छोड़ने का प्रयत्न करेंगे ।

शब्दार्थ- पाप - बुरा कार्य, तीर्थंकर - तीर्थ के कर्ता, अचरज- आश्चर्य, हवन-आग जलाकर आहूति डालना, अवधिज्ञान - द्रव्य, क्षेत्र, काल मर्यादा पूर्वक रूपी पदार्थ को इंद्रियों की सहायता के बिना जानना अवधिज्ञान है, भ्रम - कुछ का कुछ समझना निर्मल - पवित्र, अखण्ड - जिसके खंड, विभाग न हो, अविनाशी - जो कभी नाश न हो, आत्मस्वभाव - जानना, देखना, पूर्व - पहले, कर्म - परिणाम, बंध - बंधन, दोष - अपराध क्षमा - बिना किसी प्रतिकार के दोषी को छोड़ देने का भाव, माफी, भूल स्वीकार करना, कष्ट के प्रति सहनशीलता, भाव - परिणाम, मृत्यु - मरना, मौत, धरणेन्द्र- व्यंतर जाति के देव, पद्मावती - व्यंतर जाति के देव, मिथ्यात्व - उल्टी मान्यता, पंचाग्नि तप - उग्र तप, ऊपर से सूर्य और चारों ओर से अग्नि जलाकर ताप में ध्यान लगाना (जो हिंसा में कारण है।), लक्ष्मी, काली, गणेश, शंकर - कुदेव, सुख - निराकुलता

भाई साहब - बालसभा में आज का विषय रखा है - पाप । बच्चों ! आप में से कौन पाप के विषय में बताएगा ?

दीदी - हाँ बच्चों मैंने आपको कितनी सारी कहानियाँ सुनाई हैं। उनमें से कोई पाप विषय वाली कहानी सुनाओ।

सक्षम - दीदी मैं सुनाऊँ ?

दीदी - हाँ - हाँ सुनाओ ।

सक्षम - बात 23 वें तीर्थंकर पार्श्वकुमार की है जब वे छोटे थे । अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे। तभी वे देखते हैं कि जंगल में कहीं आग जल रही है। सारे मित्रों को भी अचरज हुआ । सब दौड़कर वहाँ गए । देखा कि एक बड़े-बड़े बालों वाला पुरूष लकड़ियाँ जला कर हवन कर रहा है। वह कोई मंत्र पढ़ रहा था। पार्श्वकुमार तो जन्म से ही अवधिज्ञानी थे । वे देखते ही जान गए कि इन जलती हुई लकड़ियों के भीतर दो नाग-नागिन जीवित जल रहे हैं।

पार्श्व कुमार ने हाथ जोड़कर जटाधारी से कहा - " नानाजी! कृपया इन लकड़ियों को बुझा दीजिए, इनके अंदर नाग-नागिन हैं। वे जलकर मर जायेंगे।"

मित्र - ये आपके नानाजी हैं ?

पार्श्वकुमार - हाँ मित्र ! ये मेरे नाना जी हैं । इनको भ्रम है कि इस तरह का हवन आदि करने से मनोकामना पूर्ण होती है। किंतु मित्र ! सच तो यह है कि इस जगत में कोई किसी का कुछ नहीं कर सकता । सारे कार्य निश्चित होते हैं। अच्छा और बुरा समय तो हमारे कर्मों के उदय से होता है। इन कर्मों को हमने ही पूर्व पर्याय में अपने भावों द्वारा बंध किया है।

पार्श्व- अरे ! अरे ! देखो लकड़ियाँ जलती जा रही है।

नानाजी - (क्रोध से) चल हट ! मूर्ख तू अभी बच्चा है ।

पार्श्व - नहीं नानाजी ! देखिये ये लकड़ी (आग से उठाकर अलग करके) इसमें नाग नागिन है । (तभी दोनो नाग-नागिन बाहर निकलते हैं वे आधे जल चुके थे। उनकी मृत्यु का समय आ गया था।)

पार्श्व - (हाथ जोड़कर सुनाते हुये नाग-नागिन से) हे जीव ! यह आपका इस पर्याय में अंतिम समय है । णमोकार महामंत्र को सुनो । अपने भावों को निर्मल करो । शांत हो जाओ। (पार्श्वकुमार दोनों आंखे बंद करके, हाथ जोड़कर णमोकार मंत्र का पाठ करते हैं । सभी मित्र भी ऐसा ही करते हैं।)

पार्श्वकुमार - यह शरीरादि से भिन्न मैं एक अखण्ड अविनाशी भगवान आत्मा हूँ । यह शरीरादि मैं नहीं । ये मेरे नहीं । इसलिये अपने आत्म स्वभाव में डूब जाओ । मात्र जानना देखना ही इसका काम है, वह काम भी अपने आप होता है। करना नहीं पड़ता । जो तुम्हारे साथ हुआ, वह तुम्हारे ही पूर्व में किये कर्म बंध का परिणाम है। इसमें किसी का दोष नहीं । ऐसा जानकर क्षमा भाव धारण करो। अभी पार्श्वकुमार बोल रहे थे। नाग-नागिन शांत होकर सुन रहे थे और उनकी मृत्यु हो गई। (उन दोनों के जीव ने स्वर्ग में धरणेन्द्र - पद्मावति देव-देवी के रूप में जन्म लिया। मृत्यु के बाद तत्क्षण अगला जन्म हो जाता है।)

इधर नाना जी क्रोधित हो गये । बोले - पार्श्व ! यह तुमने ठीक नहीं किया। मेरी तपस्या भंग कर दी। मैं तुमसे बदला जरूर लूंगा। कहकर वे चले गये ।

आगम - यह कहानी तो मैंने भी सुनी है। पर इसमें पाप तो आया ही नहीं।

भाईसाहब - बेटा इसमें पाप का बाप मिथ्यात्व का रूपक बताया है। सारे पापों का मूल मिथ्यात्व है। जीव मिथ्यात्व के कारण ही सारे पाप करता है।

दीदी - हाँ बच्चों ! उल्टी मान्यता को मिथ्यात्व कहते हैं। पार्श्व कुमार के नानाजी को उल्टी मान्यता थी कि उनको हवन, पंचाग्नि तप, कठोर व्रत, लक्ष्मी, काली देवी को मानने से गणेश, शंकर आदि देवों की पूजा करने से सुख होगा।

कमल - पर सुख तो आत्मा में है। वह बाहर से नहीं आता।

भाई साहब - हाँ कमल ! सुख बाहर से तो नहीं आता। आत्मा ही सुख का खजाना है। आत्मा की सच्ची समझ से ही मिथ्यात्व दूर होता है। और तब ही हम पापों से भी बच सकते हैं।

सारे बच्चे कुछ क्षण मंत्रमुग्ध शांत होकर बैठे रहे । तभी दीदी ने कहा - अरे ! कहानी हो गई, ताली तो बजाओ । सभी ने जोर से ताली बजाई।

दीदी - सुनो एक बात - पापों का राजा है, मिथ्यात्व उनका नाम । अनादि से है साथ हमारे, उल्टी मान्यता इसका काम है । लोभ है मंत्री उसका हिंसा सेनापति । झूठ चोरी है दास-दासियाँ, कुशील परिग्रह है उसकी सेना। जीत सकते हैं हम इससे, निश दिन जपकर आतमराम। अच्छा बच्चों आज की बाल सभा यहीं समाप्त बोलो! जय जिनेन्द्र, जय तारण-तरण

लाभ - पार्श्वनाथ भगवान की इस कहानी को पढ़कर हम भी उल्टी मान्यता, मिथ्यात्व से बच पायेंगे। आत्मा और धर्म की सच्ची समझ होने से हमें भी पार्श्वनाथ भगवान की तरह सच्चा सुख प्राप्त होगा ।

याद रखें -

1. उल्टी मान्यता को मिथ्यात्व कहते हैं । 2. मिथ्यात्व हमारे सारे पापों का बाप है।

3. लोभ को भी पाप का बाप कहते हैं । 4. हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह ये पाँच पाप हैं। जिनकी परिभाषा निम्न है -

हिंसा - आत्मा में जो मोह-राग-द्वेष उत्पन्न होते हैं वे भाव हिंसा है। दूसरों को सताना, मारना, द्रव्य हिंसा है।

झूठ - जैसा देखा, जाना और सुना वैसा न कहकर अन्यथा कहना झूठ है। सत्य कहने से पहले सत्य जानना आवश्यक है।

चोरी - किसी की पड़ी हुई, भूली हुई, रखी हुई वस्तु को बिना उसकी आज्ञा लिए उठा लेना या उठाकर किसी को दे देना यह चोरी है।

कुशील - विषय वासना बुरी निगाह है। माँ, बहन, नारियों को बुरी निगाह से देखना कुशील है।

परिग्रह - अंतरंग में मिथ्यात्वादि नौ कषाय का भाव परिग्रह है और बाह्य में रूपया, पैसा, मकान, दुकान सामान आदि जोड़ना परिग्रह है।

5. देवी-देवताओं, भगवान की पूजा से धर्म होगा, सुख होगा, ऐसी मान्यता मिथ्यात्व है।

6. हमें मिथ्यात्व को जितना जल्दी हो, छोड़ देना चाहिए ।

7. मिथ्यात्व को छोड़ने के लिये, आत्मा का स्वरूप समझना आवश्यक है।

अभ्यास-

प्रश्न 1 खाली स्थान भरो -

1. पार्श्वनाथ .... वे तीर्थंकर हैं ।

2. पार्श्वकुमार जनम से .... ज्ञानी थे ।

3. लकड़ी के अंदर जलने वाले ....नागिन थे ।

4. सारे .... निश्चित होते हैं।

प्रश्न 2 सही / गलत ☑ ☒ का निशान लगाओ -

1. अच्छा, बुरा समय हमारे कर्मो के उदय से होता है । ☐

2. यह शरीरादि से भिन्न मैं एक अखंड अविनाशी भगवान आत्मा हूँ । ☐

3. ये शरीरादि मैं नहीं, ये मेरे नहीं है । ☐

4. नाग नागिन के जीव मरकर स्वर्ग में धरणेन्द्र-पद्मावती हुए । ☐

5. जीव मिथ्यात्व के कारण अच्छे कार्य करता है । ☐

प्रश्न 3 सोच समझकर उत्तर दो -

1. उल्टी मान्यता को मिथ्यात्व क्यों कहते हैं?

उत्तरः ....

2. सुख कहाँ हैं ?

उत्तरः ....

3. पार्श्व कुमार ने नाग-नागिन से क्या कहा?

उत्तरः ....

4. मिथ्यात्व कैसे दूर हो सकता है?

उत्तरः ....

5. पापों के कितने प्रकार होते हैं, नाम बताओ ।

उत्तरः ....

प्रायोजना कार्य -

1. अपनी बालसभा में ऐसी ही अन्य कहानियाँ सुनाओ ।
2. पापों का राजा कविता याद करके सुनाओ ।
3. मिथ्यात्व से बचाने के लिये तुम अपने मित्र को कैसे समझाओगे ।
4. यदि किसी जीव का अंतिम समय है तो तुम क्या करोगे ?

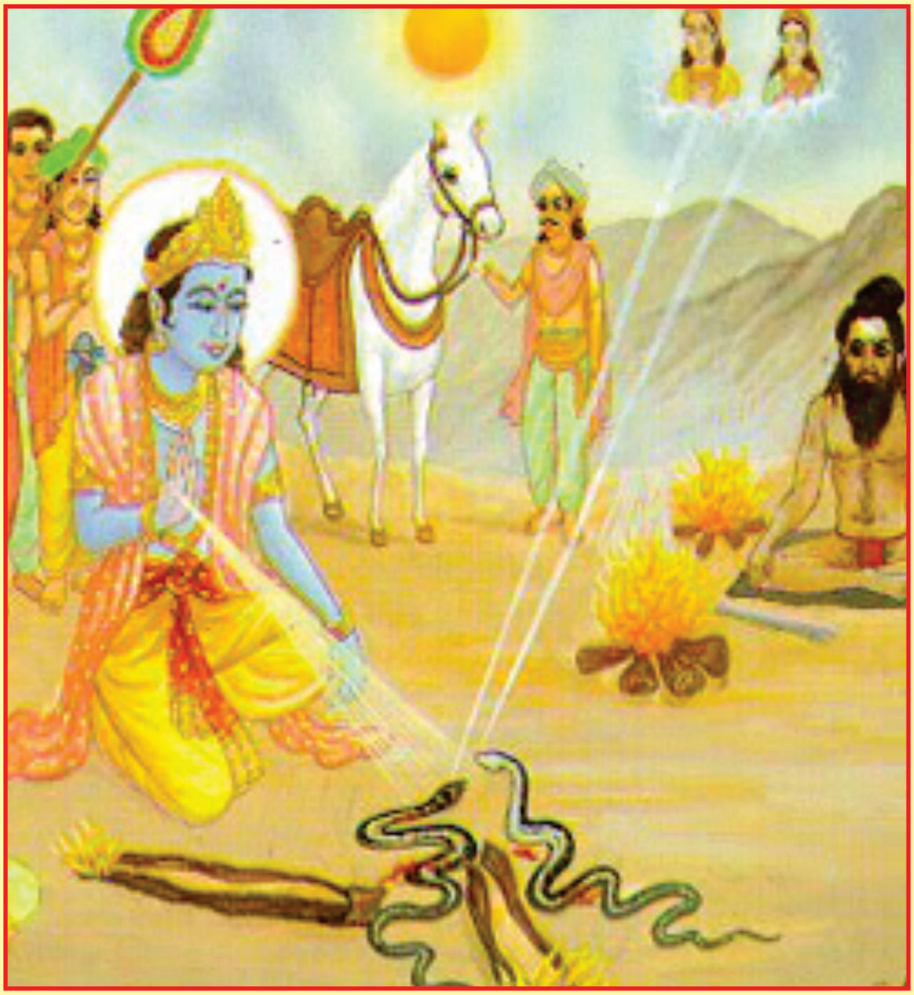

पाठ - 9
कलिकाल सर्वज्ञ कुंदकुंदाचार्य

संकेत - इस पाठ को पढ़कर आचार्य कुंदकुद के पूर्वभव से परिचित होंगे। जिनवाणी की विनय करना सीखेंगे। जिनवाणी के स्वाध्याय हेतु प्रेरित होंगे। कहानी कला को सीखेंगे।

शब्दार्थ- ग्वाला - गाय की देखभाल करने वाला, बटोरना - एकत्रित करना
ताड़पत्र - ताड़ के पत्ते, मंत्र - ध्यान हेतु विशेष शब्द या वाक्य, आले - अलमारी
भव - जन्म, पंच - पाँच, परमागम - परम + आगम, कलिकाल - वर्तमान काल
सर्वज्ञ - सब जानने वाला, आचार्य - 36 गुण धारी, संघ नायक, आचार्य परमेष्ठी

एक ग्वाला था। जंगल में दिन भर लकड़ियाँ बटोरना, गाय चराना उसका काम था। एक दिन की बात है- उस दिन वह जंगल में बहुत अंदर तक चला गया। उसे थकान लगने लगी। वह एक पेड़ के नीचे सो गया।

अचानक बहुत तेज गर्मी लगने के कारण उसकी नींद खुल गई। आँख खोलते ही उसने देखा कि चारों तरफ आग लगी हुई है। वह भागने लगा। तभी उसका ध्यान एक पेड़ की तरफ गया। उस पेड़ में आग नहीं लग रही थी। पास जाकर देखा। उस पेड़ पर कुछ ताड़पत्र बंधे हुये रखे थे। उसने सोचा- यह तो अचरज की बात है। इन पत्तों में जरूर कुछ मंत्र लिखे हैं। तभी तो उनके प्रभाव से पेड़ में आग नहीं लगी।

उसने उन बंधे हुये पत्तों को घर लाकर आले में रख दिया। अब रोज सबेरे वह नहा धोकर उन ताड़पत्रों को सिर नवाता, तब ही जंगल जाता। वह उन्हें पढ़ नहीं पाता था। दिन बीतते गये। एक दिन उसने वन में ध्यानमग्न मुनिराज को देखा। मुनिराज ही शास्त्रों का उचित उपयोग कर सकते हैं इसलिए वे ग्रंथ उसने उन्हें समर्पित कर दिए। शास्त्र दान की भी बड़ी महिमा है। आयु पूर्ण कर वे ग्वाले दूसरे भव में कुंदकुंद हुये। कौण्डकुण्डपुर ग्राम में इनका जन्म हुआ इसलिये इनका नाम कुंदकुंद पड़ा। कुंदकुंदाचार्य ने पंच परमागम-समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड़, पंचास्तिकाय ग्रंथ लिखे। यही कलिकाल सर्वज्ञ कुंदकुंद आचार्य हैं।

लाभ - इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें भी अपनी जिनवाणी, शास्त्र, ग्रंथों को विनयपूर्वक सम्हाल कर रखना चाहिए। जिनवाणी को पढ़कर हम भी मोक्ष मार्ग पर चल सकते हैं। सच्चा सुख पा सकते हैं। आचार्य कुंदकुंद के समान बनने का प्रयास कर सकते हैं।

देव - शास्त्र - गुरू

रिंकू आओ, पिंकू आओ, रिंकी आओ, पिंकी आओ ।
आओ तुमको एक बात बतायें, देव गुरू का ज्ञान करायें ।
वीतराग हैं राग रहित जो, है सर्वज्ञ सर्व को जाने जो ।
है सर्वज्ञ किन्तु निज ध्याते, करें न कुछ, वह देव कहायें।
वीतरागमय जिनवाणी, हम सबकी है कल्याणी।
सात तत्व छह द्रव्य बताये, शुद्धात्म है भिन्न दिखाए।
ज्ञान हो अज्ञान मिटाये, समकित हो मिथ्यात्व भगाए।
नग्न दिगम्बर श्री मुनिवर हैं, यही महान पूज्य गुरूवर हैं।
अट्ठाईस मूलगुण पालें, सिद्धों सम निजरूप निहारें ।
रिंकू, पिंकू, रिंकी, पिंकी आओ, इनको सादर शीश नवाओ।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न1 कलिकाल सर्वज्ञ कौन है ?

उत्तरः ....

प्रश्न2 कुंदकुंद नाम कैसे पड़ा ?

उत्तरः ....

प्रश्न3 पंच परमागम कौन से हैं ?

उत्तरः ....

प्रश्न4 ताड़पत्र क्या है? इसमें कैसे लिखा जा सकता है पता करो और लिखकर देखो।

उत्तरः ....

प्रश्न5 ग्वाले ने ''ताड़पत्रों'' का क्या किया ?

उत्तरः ....

प्रश्न6 ग्वाले ने ताड़पत्र मुनिराज को क्यों समर्पित किए ?

उत्तरः ....

प्रश्न7 यदि तुम ग्वाला होते तो क्या करते?

उत्तरः ....

प्रश्न8 जिनवाणी की विनय क्यों करना चाहिए ?

उत्तरः ....

प्रश्न9 जंगल में लगी हुई आग के बीच ताड़पत्र का चित्र बनाईये और रंग भरिये ।

प्रश्न10 इस कथा पर कॉमिक्स बनाईये ।

प्रश्न11 चैत्यालय जी में एक दिन जिनवाणी की विनयपूर्वक सम्हाल करो। देखों कि उसमें क्या लिखा है?

पाठ - 10

कषायों की कथाएँ

चार कषाय : कषाय आत्मा का स्वभाव नहीं, विभाव है।

कषाय : जो आत्मा को कसे अर्थात् दुख दे उसे कषाय कहते हैं। आत्मा में उत्पन्न होने वाले विकार-राग-द्वेष ही कषाय है। जिससे संसार की ही प्राप्ति होती है। आओ हम कहानियों से कषाय को समझें।

कषाय चार हैं - क्रोध, मान, माया, लोभ

पहली कषाय : क्रोध

तुंकारी की आत्मकथा

मेरा नाम भट्टा रखा गया था। मेरे पिता शिवशर्मा धनवान थे और राजा का आदर करते थे। मैं ब्राह्मण बहुत सुंदर हूँ इसलिए मुझे स्वयं पर बहुत घमण्ड था। बोलने में मैं बहुत तेज थी, सभी मुझसे डरते थे। कोई भी मुझे 'तू' कहता तो मैं उसके साथ लड़-झगड़कर उसकी सौ पीढ़ियों तक गालियाँ दे डालती। जिससे पिताजी परेशान थे। वे निर्भीक थे, राजा भी उन्हें सम्मान करते थे। पिता ने शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि - ''कोई भी मेरी बेटी को तू कहकर न बोले।'' किंतु दुर्भाग्यवश मेरा नाम 'तुंकारी' पड़ गया। लोग मुझे 'तुंकारी' कहते और मैं उन्हें गालियाँ देती। जब मैं बड़ी हुई तो मेरे साथ विवाह हेतु कोई तैयार नहीं था।

एक दिन भाग्य से सोम शर्मा ब्राह्मण तैयार हुए और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि- मैं इसे कभी 'तू' कहकर नहीं पुकारूँगा । विवाह हुआ। कई दिन सुखपूर्वक बीत गये।

एक दिन पतिदेव नाटक देखकर आधी रात के बाद घर लौटे। क्रोध में आकर मैंने दरवाजा नहीं खोला। बहुत देर खटखटाने के बाद पतिदेव को गुस्सा आ गया। वे चिल्लाने

लगे - ''अरे ! तू सुनती नहीं है। मैं इतनी देर से बाहर खड़ा चिल्ला रहा हूँ।'' बस अब जैसे ही 'तू' सुना और मेरा गुस्सा बढ़ गया। सच ही कहा है -

पड़ा स्वभाव नजाये कभी जीव से ।
करेलो मीटो न होय गुड़ घी से ।।

मैं क्रोध में अंधी हो गई। दरवाजा खोली और जंगल में भाग आयी। जंगल में चोरों ने मेरे कीमती जेवर-गहने छीन लिये। मुझे विजयसेन भील को सौंप दिया। वह मेरा शीलभंग करना चाहता था। किंतु मैं दृढ़ थी, मेरी सहायता दिव्य स्त्री ने की। डरकर विजयसेन ने मुझे एक सेठ और सेठ ने रंगरेज को सौंप दिया। रंगरेज मनुष्य के खून से कंबल रंगता था। उसने मेरे शरीर से हजारों बार खून निकाला और कंबल रंगा। कई दिन बीत गये। अचानक एक दिन मेरा भाई वहां से निकला। मेरी गालियों भरी आवाज सुनकर उसने मुझे पहिचाना। राजा की सहायता से भाई ने मुझे पापी रंगरेज से मुक्त किया। खून निकल जाने से मुझे लकवे की बीमारी हो गई। वैद्य ने लक्षपाक तेल की मालिश करवा कर मुझे स्वस्थ्य किया।

तभी मैने वीतरागी निर्ग्रंथ मुनि के उपदेश सुने। शास्त्रों का स्वाध्याय किया। सम्यक्तपूर्वक व्रतों को ग्रहण करके प्रतिज्ञा ली कि- कभी क्रोध नहीं करूँगी। मुझे पता चल गया कि क्रोध का फल इस भव में तो बुरा है ही, परभव में भी अनंत काल संसार में घुमाने वाला है।

क्रोध कषाय :

गुस्से को क्रोध कहते हैं। इससे दूसरे का बुरा होने के कारण अपना बुरा होता है। क्षमा के अभाव में क्रोध होता है।

याद रखें...

1. क्रूर परिणाम क्रोध है। क्रोध से अहित होता है।
2. क्रोध आने का मुख्य कारण - आत्म स्वभाव को न जानना है ।
3. क्रोध के पाँच निमित्त हैं-
   1. कषाय भाव
   2. भूख प्यास लगना ।
   3. इच्छापूर्ति न होना ।
   4. स्वयं को कोई गलत कहे ।
   5. अज्ञान, मिथ्यात्व ।
4. क्रोध से बचने का उपाय क्षमा है। अन्य उपाय -
   1. दूसरों के सुख-दुख समझना ।
   2. वस्तु स्थिति को समझना ।
   3. स्थान बदल लेना।
   4. जवाब न देना। मौनेन कलहो नास्ति ।
   5. मुँह में पानी भर लेना ।

दूसरी कषाय - मान

मारीचि का मान : लघुकथा

जिनके दादा तीर्थंकर, पिता, चाचा इसी भव में मोक्ष जाने वाले थे । उस मारीचि कुमार ने अनंत भव मान करके बिता दिये ।

भगवान आदिनाथ के साथ चार हजार राजाओं ने दीक्षा ली थी। किंतु उन्हें मुनिधर्म आचरण की जानकारी नहीं थी। आदिनाथ मुनि छः माह तक मौन ध्यान में लीन थे। तब किससे मुनि आचरण की जानकारी लेते। क्योंकि तीसरे काल के प्रथम मुनि तो आदिनाथ ही थे। तब अनेक साधु भूख-प्यास से व्याकुल होकर भ्रष्ट हो गये। मारीचि कुमार भी साधु हो गये थे किंतु वे महामानी थे। मिथ्यात्व और पाखण्ड का उन्होंने प्रचार किया। जब आदिनाथ भगवान को केवलज्ञान हुआ तब सभी भ्रष्ट साधु मुनि धर्म जानकर पुनः दीक्षा लेकर आत्म कल्याण करने लगे। किंतु मारीचि ने अतिमानवश अपना

धर्म चलाने के लोभ से, सम्मान पाने के लोभ से भगवान के वचनों का अनादर करने लगे। उनका विरोध करने लगे। मिथ्यात्व, पाखण्ड, क्रिया कांड, कुदेव पूजा, पंचाग्नि तप, मिथ्या उपवास का प्रचार किया। मानवश किये गये पाखण्ड के कारण असंख्यात भवों तक त्रस, स्थावर योनियों में निगोद, नरक, तिर्यंच, देव, मनुष्य गतियाँ प्राप्त की। सिंह की पर्याय में संयोग से मुनियों के उपदेश सुनकर अपनी आत्मा को पहचाना। अणुव्रत अंगीकार कर दसवें भव में तीर्थंकर महावीर बने और मोक्ष गये।

सोचिये यदि मारीचि ने तत्काल ही दादा की बात मानी होती, मान छोड़ दिया होता तो उसी समय मोक्ष का उपाय कर लेते। अनंत भवों के दुख न झेलने पड़ते।

मान कषाय : मान घमण्ड को कहते हैं। इसमें दूसरों को नीचा दिखाने की ही कोशिश होती है। धन, बल, ज्ञान, रूप, ऋद्धि, माता-पिता का कुल-कुटुम्ब आदि का मान करना मान कषाय है।

याद रखें...

1. अहंकार, गर्व, घमंड मान कषाय है।
2. विनम्रता मान से दूर रखती है।
3. किसी भी तरह का घमण्ड करने के पहले केवलज्ञानी, भगवान का स्वरूप जान लो।
4. स्वयं को समझो। दूसरों की प्रशंसा करो ।
5. मान, अभिमान, स्वाभिमान एक ही शब्द हैं। मानी के मित्र कर्म होते हैं।

तीसरी कषाय - माया

त्रिलोक मण्डन : लघुकथा

किसी पर्वत पर गुणनिधि मुनि चार महिने का उपवास कर विराजमान थे। उन ऋद्धिधारी मुनि की देवगण स्तुति कर रहे थे। चातुर्मास समाप्त होने पर वे मुनि आकाश मार्ग से विहार कर गये। इधर मृदुमति नाम के दूसरे मुनि उसी क्षण आहार के लिए गाँव में आ गये। श्रावकों ने इन्हें गुणनिधि मुनि समझकर बहुत ही स्तुति भक्ति की। मुनि ने मायाचारी रखी और अपना नाम इसलिए नहीं बताया कि मेरी भक्ति कम हो जायेगी अन्त में वे मुनि मरकर देव हो गये किन्तु इस मायाचार के पाप से वे वहाँ से च्युत होकर 'त्रिलोक मण्डन' हाथी हो गये जिसे कि रावण ने अपने वश में किया था। मायाचारी से तिर्यंचगति होती है इसलिए मायाचार का त्याग करके सरल प्रवृति रखनी चाहिये।

माया कषाय :

माया छल-कपट को कहते हैं। दूसरों को ठगने की कुटिलता या छल से माया कषाय होती है। मन-वचन-काय की एकता न होने से माया कषाय होती है।

याद रखें...

1. दूसरों को ठगने से के लिए, नीचा दिखाने के लिए छल, कपट करना माया है।
2. अपने विचारों, भावों को छिपाना कुटिलता है ।
3. मन, वचन, काय की एकता न होना माया है ।
4. मायाचारी पर कोई विश्वास नहीं करता ।
5. एक दिन मायाचारी सबके सामने आ ही जाती है, तब निंदा का पात्र बनना पड़ता है।
6. सरल स्वभाव ही माया को रोकने का उपाय है।
7. ईमानदारी, सादगी, सत्यवादिता माया से बचने का उपाय है।
8. माया कषाय की और कहानियाँ खोजो और सुनाओ ।
9. यदि तुम मृदुमति मुनि होते तो क्या करते? बताईये ।
10. चित्र बनाईये और रंग भरिये ।

चौथी कषाय - लोभ

फणहस्त की कथा

नदी के प्रवाह में लकड़ियाँ इकट्ठी करके लाते हुए एक आदमी को रानी ने देखा। रानी को लगा यह गरीब है। रानी ने राजा से उसकी सहायता के लिए धन देने के लिए कहा। राजा ने उस आदमी को बुलाया। तब उसने अपने बैल की जोड़ी के लिये एक बैल मांगा। राजा उसका एक बैल देखने के लिये उसके घर गया । देखा कि उसके यहाँ रत्न सुवर्णसे बने हुए पशु-पक्षियों की सैकड़ों जोड़ियाँ थीं। राजा के स्वागत में उसकी स्त्रीने राजा को भेंट करने के लिए रत्नथाल भर कर सेठ को दिया। अति लोभ से रत्नथाल हाथ में लेते ही सेठ की अंगुलियाँ सर्प के फण सदृश हो गई। यह सब देखकर राजा ने उसकी निंदा करके 'फणहस्त' नाम रख दिया वह लोभी मरकर अपने भण्डार में सर्प हो गया। वहाँ पर भी अपने ही पुत्रों के द्वारा मारा गया और लोभ में मरकर चौथे नरक चला गया।

लोभ :

लोभ पाप का बाप है । किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा लोभ है। लोभी सुखी नहीं रह सकता। संतोष के अभाव में लोभ कषाय होती है।

याद रखें...

1. धनादि की तीव्र इच्छा लोभ है ।
2. लोभ सारे पापों की जड़ है।
3. लोभी सदा सुविधाओं में रहना चाहता है।
4. संतोष ही लोभ से बचने का एकमात्र उपाय है।
5. लोभ दुर्गति का कारण है। निंदा होती है ।

अभ्यास-

कहानी : क्रोध

प्र. 1 प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. 'तुंकारी' कौन थी ?
2. भट्टा का नाम तुंकारी कैसे पड़ा ?
3. तुंकारी को कब दुःख झेलना पड़े ?
4. रंगरेज क्या करता था ?
5. यदि तुम तुंकारी होते तो क्या करते ?
6. क्या हम अपनी गलती सुधार सकते हैं ? कैसे बताईये ।
7. क्रोध किसे कहते हैं ?
8. क्रोध से बचने के क्या उपाय है ?
9. क्रोध कषाय पर और कहानियाँ खोजो ।
10. इस कहानी का चित्र बनाकर रंग भरो ।

कहानी : मान

1. मारीचि कौन थे ?
2. पहले मुनि कौन थे ?
3. भ्रष्ट हुए मुनियों ने क्या किया ?
4. मारीचि ने पाखण्ड प्रचार क्यों किया ?
5. यदि तुम मारीचि होते तो क्या करते ? कहो ।
6. मान किसे कहते है ?
7. मान कषाय से बचने के लिए तुम क्या करोगे ?
8. मान कषाय पर और कहानियाँ खोजो और सुनाओ ?
9. भगवान महावीर के पूर्व भवों की कहानियाँ खोजो और सुनाओ ?
10. इस कथानक पर चित्र बनाओ रंग भरो ?

कहानी : माया कषाय

1. मायाचारी कौन था ?
2. मायावश मृदुमति मुनि ने क्या किया ?
3. मृदुमति मुनि ने किस लोभ में माया की ?
4. इस मायाचारी का क्या फल मिला ?
5. माया कषाय किसे कहते हैं ?
6. मायाचारी से बचने के क्या उपाय है ?
7. क्या तुम कभी किसी बात को छुपाकर रखते हो ? सोचो और बताओ ।
8. माया कषाय की और कहानियाँ खोजो और सुनाओ ?
9. यदि तुम मृदुमति मुनि होते तो क्या करते ? बताइये ।
10. कहानी की विषयवस्तु पर आधारित चित्र बनाईये, रंग भरिये ।

कहानी : लोभ

1. लोभी कौन था ? राजा या सेठ ?
2. सेठ का नाम फणहस्त कैसे पड़ा ?
3. लोभ का फल क्या होता है ?
4. लोभ कषाय किसे कहते हैं ?
5. यदि आप फणहस्त बन जाते तो क्या करते ?
6. लोभ कषाय से बचने के क्या उपाय है ?
7. एक बार लोभ करके क्या उससे बचा जा सकता है ? हाँ तो कैसे ?
8. फणहस्त जैसी और कहानियाँ प्रथमानुयोग के शास्त्रों में खोजो और सुनाओ ।
9. अपनी कापी में 15 दिन तक नोट करो कि आज मैंने क्या लोभ किया ?
10. कहानी पर चित्र बनाओ, रंग भरो ।

पाठ - 11

आओ कविताएँ पढ़ें

वो हैं मेरे आदिनाथ

नाभिराय हैं पिता जिनके
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
मरूदेवी है माता जिनकी -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
ऋषभदेव है जिनका नाम -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
नन्दा-सुनन्दा रानी जिनकी -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
ब्राम्ही-सुन्दरी बेटी जिनकी -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
भरत-बाहुबली बेटे जिनके -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
असि-मसि-कृषि की शिक्षा दीनी -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
राज त्याग कर दीक्षा धारी -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
राजा श्रेयांस ने दिया आहार -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
इक्षुरस का किया पारणा -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।
अष्टापद से मोक्ष पधारे -
वो हैं मेरे आदिनाथ ।

सिंह से सिद्ध

महाभयंकर शेर था वन में ।
मिले शिकार सोचता मन में ।।
हिरण तभी दिया दिखलाई ।
जोर से उसने छलांग लगाई ।।
पुण्योदय उस सिंह का आया ।
महाभाग्य मुनि दर्शन पाया ।।
आंख फाड़ देखे मुनिवर को ।
धीर-वीर निर्भय मुनिवर को ।।
संजय-विजय खड़े मुनिराज ।
बोले सुनो भव्य वनराज ।।
नहीं शेर तुम हो शुद्धातम ।
राग-द्वेष तज बनो परमातम ।।
शुद्धातम की कथनी सुनकर ।
परमातम दिखलाया मुनिवर ।।
पर्याय-बुद्धि सिंह ने छोड़ी ।
तन मन से है ममता तोड़ी ।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान है पाया ।
दुखमय पथ तज शिवपथ धाया ।।
दसवें भव में महावीर बनेगा ।
वही सिंह अब सिद्ध बनेगा ।।

साभार - किलकारी

पाठ - 12

जिनवाणी स्तुति

सवैया- मिथ्यातम नाशवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को।

आपा पर भासवे को, भानु-सी बखानी है।

छहों द्रव्य जानवे को, बन्ध विधि भानवे को।

स्वपर पिछानवे को, परम प्रमानी है।

अनुभव बतायवे को, जीव को जतायवे को।

काहू न सतायवे को, भव्य उर आनी है।

जहाँ-तहाँ तारवे को, पार के उतारवे को।

सुख विस्तारवे को, ये ही जिनवाणी है।

दोहा- हे जिनवाणी भारती, तोहि जपों दिन रैन।

जो तेरी शरणा गहे, सो पावे सुख चैन ।।

जा वाणी के ज्ञान तैं, सूझे लोकालोक ।

सो वाणी मस्तक नवों, सदा देत हों ढोक।।